- पी.आर. की अंतिम अवस्था में प्रायः निमोनिया एवं परिणामस्वरूप खाँसना दिखाई देता है। गाभिन पशु में गर्भपात करता है।

उपचार

- विषाणु जनित रोग होने के कारण इसका कोई विशिष्ट उपचार नहीं है फिर भी अवसरवादी जीवाणओं के संक्रमण को रोकने के लिए बेहद स्पेक्ट्रम वाली जीवाणु नाशक औषधियों का उपयोग किया जा सकता है।
- साथ ही साथ रागी पशु को विटामिन बी कॉन्प्लेक्स एवं शरीर के पानी एवं भोजन की आवश्यकता की पूर्ति के लिए ग्लूकोज़ को भी पांच छःह दिनों तक दिया जा सकता है।
- बिमार/प्रभावित पशुओं को पर्याप्त आराम देना चाहिए।
- प्रभावित पशुओं को मुलायम आहार जैसे चावल आदि बना दलिया देना चाहिए।
- अल्सर/घाव पर ग्लिसरीन या पशु वसा को लगाना चाहिए।
- एंटीबायोटिक उपचार के लिए नज़दीक के पशु चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए।
- बिमार/प्रभावित पशुओं को चरने के लिए नहीं छोड़ना चाहिए।
- मुंह के अल्सर/घाव को 1 लीटर पानी में 1 ग्राम पोटाशियम परमैंगनेट मिलाकर प्रतिदिन दो तीन बार धोना चाहिए।
- बिमारी फेलने की स्थिति में रिंग टीकाकरण के लिए निकटतम पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

रोकथाम

- जानवरों की नियमित और उचित टीकाकरण द्वारा पहला टीकाकरण 3–4 महीने की उम्र में अगला टीकाकरण 1 वर्ष में एक बार (जहाँ पर रोग महामारी के रूप में है)। सामान्यता यह टीका तीन वर्ष तक रोग से सुरक्षा देता है। इस वैक्सीन का 1 मि.ली. मात्रा को त्वचा के नीचे लगाते हैं तथा बनाने के 2 घंटे के भीतर ही वैक्सीन सभी आयु के पशु एवं गाभिन पशुओं में प्रयोग के लिए सुरक्षित है।
- बिमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए।
- प्रभावित क्षेत्र की भेड़ एवं बकरी के आवागमन पर पूर्ण रोक लगा देनी चाहिए।
- नए खरीदे गए पशुओं को पुराने पशुओं से अलग रखना चाहिए।
- रोग से मृत हुए पशु एवं संपर्क में आई वस्तुओं के भली–भांती निस्तारण द्वारा।
- झुंड में साफ–सफाई के साथ उपायुक्त कीटाणु नाशक जैसे फीनॉल, सोडियम हाइड्रोक्साई 2 प्रतिशत का उपयोग करना चाहिए।

नोट :

अधिक जानकरी के लिए अपने निकटतम पशु चिकित्सालय पर संपर्क करें

संकलनकर्ता :

डॉ० राजेश अग्रवाल एवं डॉ० राजीव सिंह

पी.पी. आर भेड़ और बकरी का प्लेग रोग

पशु औषधि विभाग
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय
शेर-ए-कश्मीर कृषि एवं प्रौधौगिकी विश्वविद्यालय
रणवीर सिंह पुरा, जम्मू - 181102

पी.पी आर.

पी.पी.आर छोटे जुगाली करने वाले पशु जैसे कि बकरी एवं भेड़ में होने वाला अत्याधिक संक्रामक विषाणु जनित (वायरल) रोग है जो प्रायः महामारी का रूप धारण कर लेता है रोग के प्रारंभ में पशु को तेज़ बुखार होता है तत्पश्चात मुंह एवं आहरनाल में घाव बनने लगते हैं आंखों में लालिमा छा जाती है पशु घास खाना तथा जुगाली करना बंद कर देता है रोगी पशुओं के नाम से भी स्त्राव बहने लगता है अंततः निमोनिया एवं पशु की मृत्यु हो जाती है।

कारक

बकरी एवं भेड़ में यह रोग पैरामिक्सोविरिडी परिवार के मारबिली समूह के विषाणु के द्वारा होता है।

संवेदनशील पशु

- यह मुख्यता भेड़ एवं बकरी में होता है।
- बकरी इस रोग के प्रति अधिक संवेदनशील होती है।
- इसके अतिरिक्त गोपशु, भैंस, ऊँट एवं सूकर में भी रोग का संक्रमण होता है किंतु इन पशुओं में ना तो रोग के लक्षण ही आते हैं और ना ही यह किसी अन्य पशुओं में रोग को फेला सकते हैं।
- यह रोग नर एवं मादा तथा सभी आयु के पशुओं में समान रूप से होता है किंतु लक्षणों की तीव्रता एवं घातक क्षमता कम आयु के पशुओं में अधिक होती है छोटे बच्चों में पैदा होने के तीन से चार माह पश्चात् जब माँ द्वारा प्रदत रोग प्रतिरोधक क्षमता कम पड़ने लगती है तब रोग के लिए संवेदनशीलता बढ़ जाती है।

प्रसार/संक्रमण

- रोगी पशु के आंसू, नासिका स्त्राव, लार एवं मल में रोग के विषाणु उपस्थित होते हैं भेड़ एवं बकरी समूह में रहने वाले प्राणी हैं अतः एक दूसरे के संपर्क में आने पर रोग का प्रसारण होता है।
- जब रोगी पशु खांसता या छींकता है तो यह विषाणु आसपास के वातावरण में छोटे–छोटे कणों के रूप में फेल जाते हैं स्वस्थ पशु जब इन विषाणु युक्त कणों कें संपर्क में आता है तब भी रोग ग्रस्त हो जाता है।
- रोगी पशु लक्षण प्रकट करने से पहले ही रोग को फेलाना शुरू कर देता है। रोगी पशु की बिछावन, झूठा चारा एवं पानी आदि से भी रोग फैलता है।

लक्षण

- कम आयु के पशुओं में रोग की तीव्रता प्रायः अधिक होती है।
- विषाणु के संक्रमण के 4 से 5 दिन में ही लक्षण प्रकट होने लगते हैं शुरू में पशु को तेज़ बुखार 104–106 डिग्री फारेनहाइट होता है जो 5 से 8 दिनों तक पशु के पुनः स्वस्थ होने या मृत होने तक चलता है।
- रोगी पशु सुस्त एवं बेचैन रहता है। चारा पानी एवं जुगाली करना बंद कर देता है। पशु की त्वचा सूखी (Dry) हो जाती है। मुंह सूख जाता है।
- नाक से पानी के समान स्त्राव बहता है जो धीरे–धीरे मवादयुक्त हो जाता है यह मवाद नासिका छिद्रो पर पपड़ी के रूप में जमना शुरू कर देता है। इससे अवरुद्ध श्वास मार्ग को साफ करने के लिए पशु खांसना एवं छींकना शुरू कर देता है।
- पशु की श्वसन तत्रं की म्यूक्स झिल्ली पर मृत कोशिकाओं के समूह या लाल धब्बे दिखाई पड़ते हैं। पशु गहरी सांस लेता है।
- पशु की आंखें लाल हो जाती हैं प्रारंभ में स्वच्छ आंसू लेकिन बाद में मवादयुक्त गीड़ निकलते हैं जिससे कभी–कभी पलकें भी चिपक जाती हैं।
- बुखार के 1 से 3 दिन पश्चात मुंह की म्यूकस झिल्ली टूटने एवं उखड़ने लगती है जिससे मुंह में लाल रंग के धब्बे व सूजन दिखती है जीभ, तालु एवं अवारी पर घाव बन जाते हैं लार का स्त्राव बढ़ जाता है किंतु यह मुंह से बाहर झाग के रूप में नहीं गिरती है मृत कोशिकाओं के समूह अवारी पर एकत्र होने लगते हैं। त्वचा एवं म्यूकस झिल्ली के मिलने के स्थान पर पपड़ी बनने लगती है।
- जब मुंह में घाव रहे होते हैं उसी समय पशुओं को डायरिया शुरू हो जाता है धीरे–धीरे डायरिया की गति बढ़ने लगती है जिससे पशु के शरीर में पानी की कमी, कमज़ोरी, सांस लेने में तकलीफ, सामान्य रूप से कम तापक्रम आदि लक्षण प्रकट होते हैं हालत के बेकाबू होने पर 5 से 10 दिनों में रोगी पशु की मृत्यु हो जाती है।